दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

''बाबा की गोदी में बैठ जाओ तो माया की छाया पड़ नहीं सकती''

1) हम सबको अभी तीन इंजन मिली हैं। हमारी गाड़ी तीन इंजन से चल रही है। परम बाप, परम शिक्षक और परम सतगुरू के हम तकदीरवान बच्चे हैं। जब हम अपनी इतनी महान तकदीर रोज़ देखते तो अन्दर से निकलता वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! जो मेरा भाग्य बना वह औरों का भी बनें।

2) हम ऊंची चोटी पर बैठे हुए ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण अटेन्शन दिया तो उसने खींचा। अगर हम कहें यह तो डर्टी है, तो वह खींच नहीं सकती। जरा भी इन्ट्रेस्ट लिया तो खींच जरूर होगी।

3) अगर मैं परचिन्तन करूंगी तो दूसरा सुनेगा। बाबा ने कहा बच्चे इस असार संसार का समाचार न सुनो, न देखो और न वर्णन करो। यह बड़ी सुन्दर है, यह अच्छी लगती। यह चीज अच्छी है, ऐसे सोचा तो खत्म। बाबा की गोदी छोड़कर उतरते क्यों हो! गोदी में सदैव बैठे रहो, उनकी छत्रछाया के नीचे रहो तो कोई की ताकत नहीं जो मेरे पास आये। माया आती है इसका कारण तुम उसे देखते हो। बाबा की गोदी छोड़ते हो। भय का भूत बैठा हुआ है। निर्भय बनो तो माया आ नहीं सकती।

4) निर्भय माना कोई भी विकार की शक्ति नहीं जो मुझे डरा सके। माया हरा नहीं सकती। मैं तो महावीर-महावीरनी हूँ। दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं जो मुझे भयभीत करे या मुझे अपनी अंगुरी दिखाये। आप चैलेन्ज करो कि कोई ऐसी ताकत नहीं जो मुझे हरा सके। यह कहने की बात नहीं लेकिन अन्दर में दृढता हो, इतना मास्टर सर्वशक्तिमान् बनकर रहो।

5) अन्दर में थोड़ा भी आलस्य आया तो पूरा ही खा जायेगा। आज थोड़ा आलस्य आयेगा, कहेंगे चलो क्लास में लेट जाते, क्या फर्क पड़ेगा। धीरे-धीरे माया पूरा ही खा लेती। सर्विस की फील्ड में भी आलस्य के बस अनेक बहाने बनाते। दिल सच्ची नहीं तो अनेक कारण निकलते। दिल सच्ची हो तो कोई भी कारण नहीं।

6) बाबा ने कहा बच्चे अपने संकल्पों को स्टॉप करने की प्रैक्टिस करो। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी निराकारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो, इसके लिए नियम बनाओ। ड्रिल यह कह नहीं सकते कि मुझे माया आती है। 5 विकार तो हैं ही भूत, है ही गन्दी चीज़। गन्दी चीज़ को देखेंगे, दृष्टि डालेंगे या उससे किनारा करके चले जायेंगे। उनके पास जायेंगे तो जरूर बदबू आयेगी। किनारे हो जाओ तो बदबू से बच जायेंगे। यह है ही छी-छी दुनिया। मैं अगर शौक से पिक्चर देखूंगी तो वह मुझे जरूर खीचेंगी। मैने देखा तो वह जरूर आकर्षित करेगी। मैने हैं। इसमें ही सभी क्लासेज़ का सार है। आज बाबा की मुरली में था तुम बच्चे यहां ट्रांसफर होने आये हो। परिवर्तन होने आये हो। तो रोज़ अपने से पूछो - मैं परिवर्तन हुआ हूँ! मेरे में परिवर्तन करने की शक्ति है। हम पहले तो पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ट्रांसफर हुए। फिर भक्ति से ज्ञान में ट्रांसफर हुए। देह-अभिमानी से देही अभिमानी बने। तो हमारे संस्कार परिवर्तन हुए। देह-अभिमान के साथ सब दुर्गुण, अवगुण भी परिवर्तन हो गये। तो हरेक यही चार्ट देखना कि मैं कहाँ तक परिवर्तन हुआ हूँ!

8) सृष्टि के साथ-साथ जीवन चक्र भी परिवर्तन शील है। अभी मेरी बैटरी फुल होती जा रही है, ऐसा तो नहीं आज फुल नशा चढ़ा हुआ है, कल छोटी मोटी बात हुई तो डाउन हो जाए। फिर कहेंगे हम तो जाते हैं अपने लौकिक में, ऐसा कहना भी सिद्ध करता अलौकिक के बने ही नहीं। मरजीवा बने ही नहीं। उनका नशा जैसे कि बालू की ढेर पर है। जरूर वह खिसकेगा इसलिए उसे सीमेन्ट की दीवार दे दो तो उतरे नहीं। आज मैने बहुत अच्छा भाषण किया, तीर लग गया। मुझे नशा चढ़ गया। अगर मैं दो चार दिन सेवा नही करता तो मेरी खुशी गायब हो जाती। आपस में दो चार दोस्त मिले तो खुश, अगर नहीं मिले तो खुशी गुम। यह सब कौन सी स्थितियां हैं?

9) हम पुरानी दुनिया से मुर्दे हो गये। कहते हैं संस्कार परिवर्तन नहीं होते। मैं कहती हो गये तब तो आये हो। माया ने छोड़ा तब तो बाबा के पास पहुंचे। माया विचारी ने तुम्हें छुट्टी दी तब तो यहाँ तक पहुंचे हो। बाबा की गोद मिली है इसलिए कोई ऐसे संस्कारों की हलचल उठाओ ही नहीं। नींद नहीं आती आप बाबा को याद करो। मुरली पढ़ो, यह तो अच्छी बात है, जागती ज्योत बनो। माया से चिढ़ते क्यों हो! चिढ़ते हो तो चिढ़ाती है।

करो, अटेन्शन रखकर प्रैक्टिस करो तो बुद्धि शीतल और शक्तिशाली बन जायेगी। खुशी में रहेंगे।

7) हम सभी को बाबा कहते लक्की स्टॉर बच्चे। हमारा कल्प पहले का लक ड्रामा में नूंधा हुआ है। हम अपनी तकदीर लेकर आये हैं। हम शिव वंशी ब्रह्माकुमार कुमारी फिर विष्णुवंशी बनते

10) देहधारी को हाथ लगाना, माना बिच्छू को हाथ लगाना। हमारी चंचलता बाबा ने समाप्त कर दी। बाबा ने हमें अचल बनाया। हम बाबा के अंगद बच्चे हैं। आपस में भी हाथ न लगाओ, बहुत खबरदार रहना है। अगर किसी को टच करते तो बाबा टच नहीं कर सकता। इसीलिए डोन्ट टच।